

# कबीर दास साहित्य का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन

Sandeep Prajapati<sup>1\*</sup>, Dr. Rajesh Kumar Niranjana<sup>2</sup>

<sup>1</sup> Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur, M.P.India

Email: ssk596259@gmail.com

<sup>2</sup> Associate Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur, M.P.India

सार- कबीर एक दूरदर्शी व्यक्ति थे, जो हमें आज भी नियमित रूप से पालन करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। ईश्वर के बारे में कबीर का विचार उनका अपना मौलिक विचार है जिसे अन्य लोगों ने भी स्वीकार किया है। कबीर का सत्य, अहिंसा और प्रेम का मार्ग आधुनिक सामाजिक जीवन का निर्धारित आदर्श बन गया है, हालाँकि कबीर ने इसे बहुत पहले ही व्यवहार में ला दिया था। वह समाज में बदलाव चाहते थे। वे हिंदुओं और मुसलमानों के बीच घनिष्ठ संबंध, समानता और प्रेम लाना चाहते थे, क्योंकि कबीर के लिए ये दोनों समुदाय एक ही ईश्वर की संतान हैं, हालाँकि वे निरंतर संघर्ष में उलझे हुए हैं, जो उन सभी भावनाओं और विचारों के विकास में बाधक हैं जो मनुष्य के योग्य हैं, और जो उनके जीवन को कष्टमय बना देता है। कबीर के पास अनुसरण करने के लिए अपनी प्रगति का मार्ग था। जीवन के हर क्षेत्र में वे अपने सिद्धांतों का बारीकी से पालन करना चाहते थे, और वे इसमें कोई उल्लंघन नहीं कर सकते थे। इस प्रकाश को एक शक्तिशाली कल्पना द्वारा महसूस किया जा सकता है जिसे निरंतर अभ्यास से विकसित किया जा सकता है। कबीर चाहते थे कि लोग सर्वव्यापी शक्ति की उपस्थिति को जानने और महसूस करने के लिए कल्पना के इस संकाय को विकसित करें। उन्हें केवल बातों में विश्वास नहीं था, लेकिन वे कथनी और करनी में समानता देखना पसंद करते थे। उसने जो कहा वह किया। कबीर का व्यवहारिक जीवन हमें कई प्रकार से शिक्षा देता है।

कीवर्ड: सामाजिक-सांस्कृतिक, मौलिक विचार, साहित्य, कबीर दास जी।

-----X-----

## 1. परिचय

कबीर दास जी पहले भारतीय संत हैं जिन्होंने हिंदू और इस्लाम दोनों को एक सार्वभौमिक मार्ग देकर हिंदू और इस्लाम का समन्वय किया है, जिसका पालन हिंदू और मुसलमान दोनों कर सकते हैं। उन्होंने हमेशा मोक्ष के साधन के रूप में कर्मकांड और तपस्वी विधियों का विरोध किया। वह कहते हैं,

“मौको कहा धुंधे बंदे, में तो तेरे पास में ना में देवल न में मस्जिद, न कब कैलास में ना तो कौन क्रिया कर्म में, नहीं योग बैराग में खोजी होई तो तुरते मिल्हो, पल भर की तलास में साधो कबीर दास जी सुनो सब स्वसो की स्वैस में”।

उन्होंने कहा कि अच्छाई के माणिक का मूल्य माणिक की खानों से अधिक होता है। उनके अनुसार, अच्छाई के साथ एक के दिल में पूरी दुनिया की सारी समृद्धि शामिल है। उन्होंने कहा कि ईश्वर तुम्हारे हृदय में और सदा तुम्हारे

साथ है, इसलिए उसकी आन्तरिक आराधना करो। उन्होंने लोगों की गहरी आंखें खोलीं और उन्हें मानवता, नैतिकता और आध्यात्मिकता का वास्तविक पाठ पढ़ाया। उनका जीवन इतिहास पौराणिक है और आज भी मनुष्य को वास्तविक मानवता सिखाता है। उनके अनुयायी 'कबीर दास जी पंथ' के नाम से जाने जाते हैं। आज के समय में ये लोग कबीर दास जी के मानवता और समरसता के विचारों को समाज तक ले जाते हैं। [1]

यद्यपि वे आध्यात्मिक जीवन में गहराई से आकर्षित थे, उन्होंने सभी संप्रदायों की खुले तौर पर आलोचना की और मानव अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं के प्रति अपने सीधे दृष्टिकोण के साथ भारतीय दर्शन को एक नई दिशा दी। गौरतलब है कि कबीर दास जी किसी धर्म के खिलाफ नहीं बल्कि धर्म के नाम पर लोगों द्वारा किए जा रहे पाखंड के खिलाफ प्रचार कर रहे थे। यही कारण है कि कबीर दास जी को पूरी दुनिया में बहुत सम्मान दिया जाता है। कबीर दास जी को सार्वभौम गुरु कहना

अतिशयोक्ति नहीं है। कबीर दास जी की कविता की एक और खूबी यह है कि वह हमारे दैनिक जीवन को घेरने वाली स्थितियों को उठाते हैं। इस प्रकार कबीर दास जी का काव्य आज भी सामाजिक और आध्यात्मिक दोनों ही सन्दर्भों में प्रासंगिक और सहायक है। कबीर दास जी का अनुसरण करने का अर्थ है अपने आंतरिक स्व को समझना, स्वयं को महसूस करना, स्वयं को जैसा है वैसा स्वीकार करना और अपने परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित करना। [2]

वह इस मायने में असामान्य है कि वह हिंदुओं, सिखों और मुसलमानों के लिए समान रूप से आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण है। उनकी शिक्षाएं सभी धर्मों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उन्होंने निष्पक्ष रूप से प्रचार किया। कबीर दास जी आत्मा, अंतरात्मा, जागरूकता की भावना और अस्तित्व की जीवन शक्ति को इस तरह से छूते हैं जो सादगी और शैली दोनों में बेजोड़ है। एक प्रसिद्ध दोहे में उन्होंने कहा:

"कबीर दास जी खड़े बजरमे सबकी चाचा खेर, ना किसी से दोस्ती ना किसी से बैर"

(कबीर दास जी खुले बाजार में खड़ा है और निष्पक्ष रूप से सभी के कल्याण की कामना करता है। वह न तो किसी का मित्र है और न ही किसी का शत्रु है।)

वह लोगों को 'दिल का सच्चा धर्म' सिखाने आए थे। वह लोगों को धर्म के खाली कर्मकांड से दूर करना चाहते थे और उन्हें वह आंतरिक मार्ग दिखाना चाहते थे जो व्यक्ति को देवत्व से मिलाने की ओर ले जाता है। दूसरे शब्दों में, उन्होंने आत्म-साक्षात्कार और भीतर निवास करने वाली निराकार दैवीय शक्ति के प्रति प्रेमपूर्ण भक्ति सिखाई। यद्यपि आत्म-साक्षात्कार अद्वैत-वेद या भारत के दर्शन के अद्वैतवादी स्कूल में पढ़ाया गया है, गुरु कबीर दास जी ने इस शिक्षा को बड़ी तीव्रता और उत्साह की प्रेमपूर्ण भक्ति के साथ दोहराया।

## 2. कबीर दास का जीवन इतिहास

### • सिद्धपीठ कबीरचौरा मठ मुलगाड़ी और उनकी परंपरा:

कबीरचौरा मठ मुलगाड़ी संत-शिरोमणि कबीर दास का घर, ऐतिहासिक कार्य स्थल और ध्यान स्थान है। वह अपने प्रकार के एकमात्र संत थे, जिन्हें "सब संतान सरताज" के नाम से जाना जाता था। ऐसा माना जाता है कि कबीरचौरा मठ मुलगाड़ी के बिना मानवता का इतिहास बेकार है जैसे संत कबीर के बिना सभी संत मूल्यहीन हैं। कबीरचौरा मठ

मुलगाड़ी की अपनी समृद्ध परंपराएं और प्रभावी इतिहास है। यह कबीर का घर होने के साथ-साथ सभी संतों के लिए साहसी विद्यापीठ भी है। मध्यकालीन भारत के भारतीय संतों ने अपनी आध्यात्मिक शिक्षा इसी स्थान से प्राप्त की थी। मानव परम्परा के इतिहास में यह सिद्ध हो चुका है कि गहन साधना के लिए हिमालय पर जाना आवश्यक नहीं है, अपितु समाज में रहकर ही किया जा सकता है। कबीर दास स्वयं इसके आदर्श संकेत थे। वह भक्ति का वास्तविक संकेत है, सामान्य मानव जीवन के साथ रहना। उन्होंने पत्थर की पूजा के बजाय लोगों को मुक्त भक्ति का मार्ग दिखाया। [3]

### • ऐतिहासिक कुआं:

यहां कबीर मठ में एक ऐतिहासिक कुआं है, जिसका पानी उनकी साधना के अमृत रस से मिश्रित माना जाता है। इसका अनुमान सबसे पहले दक्षिण भारत के महान पंडित सर्वानंद ने लगाया था। वह यहाँ कबीर से विवाद करने आया था और उसे प्यास लगी थी। उसने पानी पिया और कमली से कबीर का पता पूछा। कमली ने उन्हें पता बताया लेकिन कबीर दास के दोहे के रूप में। [4]

"कबीर का घर सीख पर, जहाँ सिलहिली गल।

पाव ना टिकाई पिपिल का, पंडित लड़े बाल।"

### • क्षमा लेने यहां आए काशी नरेश

एक बार की बात है काशी नरेश राजा वीरदेव सिंह जू देव अपनी पत्नी के साथ कबीर मठ में अपना राज्य छोड़कर क्षमा प्राप्त करने आए। इतिहास इस प्रकार है: एक बार काशी के राजा ने कबीर दास के बारे में बहुत कुछ सुना तो सभी संतों को अपने राज्य में बुलाया। कबीर दास अपना छोटा सा पानी का घड़ा लेकर अकेला ही पहुँच गया। उसने छोटे बर्तन से सारा पानी अपने पैरों पर डाला, पानी की थोड़ी मात्रा बहुत दूर तक जमीन पर बहने लगी और पूरे राज्य में पानी भर गया, तो कबीर से उसके बारे में पूछा गया। उन्होंने कहा कि जगन्नाथपुरई में एक भक्त पांडा अपनी झोपड़ी में खाना बना रहा था जिसमें आग लग गई।

मैंने जो पानी डाला, वह झोपड़ी को जलने से बचाने के लिए था। आग गंभीर थी इसलिए छोटी बोटल से और पानी मंगवाना बहुत जरूरी था। लेकिन राजा और उनके अनुयायियों ने उस कथन को कभी स्वीकार नहीं किया और वे एक वास्तविक गवाह चाहते थे। उन्होंने सोचा कि

उड़ीसा शहर में आग लगी है और कबीर यहाँ काशी में पानी डाल रहे हैं।

#### • समाधि मंदिर

समाधि मंदिर का निर्माण उस स्थान पर किया गया है जहाँ कबीर अपनी साधना करते थे। साधना से समाधि तक की यात्रा तब मानी जाती है जब कोई संत इस स्थान पर आता है। आज भी यह वह स्थान है जहाँ संतों को अदृश्य सकारात्मक ऊर्जा का आभास होता है। यह जगह शांति और एनर्जी के लिए दुनियाभर में मशहूर है। ऐसा माना जाता है कि उनकी मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार के लिए उनके शरीर को ले जाने को लेकर लोग आपस में झगड़ रहे थे। लेकिन, जब उनके समाधि कक्ष का दरवाजा खोला गया, तो केवल दो फूल थे, जो उनके हिंदू मुस्लिम शिष्यों के बीच अंतिम संस्कार के लिए वितरित किए गए थे। समाधि मंदिर का निर्माण मिर्जापुर की मजबूत ईंटों से किया गया है।

#### • कबीर चबूतरा स्थित बीजक मंदिर

यह स्थान कबीर दास का कार्यस्थल भी था और साधनास्थल भी। यही वह स्थान है जहाँ उन्होंने अपने शिष्यों को भक्ति, ज्ञान, कर्म और मानवता का ज्ञान दिया था। उस स्थान का नाम कबीर चबूतरा रखा गया। बीजक कबीर दास की महान कृति थी, इसलिए कबीर चबूतरा का नाम बीजक मंदिर पड़ा। [5]

“कबीर तेरी झोपड़ी, गलियों के पास।

जो करेगा सो भरेगा, तुम क्यों हॉट उदास।”

#### 3. कबीर दास का देश को योगदान

मध्यकालीन भारत के भक्ति और सूफी आंदोलन के संत संत कबीर दास उत्तर भारत में अपने भक्ति आंदोलन के लिए बड़े पैमाने पर हैं। उनका जीवन चक्र काशी (बनारस या वाराणसी के रूप में भी जाना जाता है) के क्षेत्र में केंद्रित है। वह जुलाहा के बुनाई व्यवसाय और कलाकारों से संबंधित था। भारत में भक्ति आंदोलन के प्रति उनके अपार योगदान को फरीद, रविदास और नामदेव के साथ अग्रणी माना जाता है। वे संयुक्त रहस्यमय प्रकृति के संत थे (नाथ परंपरा, सूफीवाद, भक्ति) जिसने उन्हें अपने स्वयं के एक विशिष्ट धर्म का बना दिया। उन्होंने कहा कि दुख का मार्ग ही वास्तविक प्रेम और जीवन है।

पंद्रहवीं शताब्दी में, वाराणसी के लोग ब्राह्मण रूढ़िवाद और शिक्षा केंद्रों से बहुत प्रभावित थे। कबीर दास ने अपनी

विचारधारा का प्रचार करने के लिए कड़ी मेहनत की क्योंकि वह निचली जाति, जुलाहा से संबंधित थे, और लोगों को यह एहसास कराया कि हम सभी इंसान हैं। उन्होंने लोगों के बीच कभी अंतर महसूस नहीं किया चाहे वे वेश्याएं हों, नीची जाति के हों या उच्च जाति के हों। उन्होंने अपने अनुयायियों को एकत्रित कर सभी को उपदेश दिया। उनके प्रचार कार्यों के लिए ब्राह्मणों द्वारा उनका उपहास उड़ाया गया था लेकिन उन्होंने कभी भी उनकी आलोचना नहीं की और इसीलिए उन्हें आम लोगों द्वारा बहुत पसंद किया गया। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से आम लोगों के मन को वास्तविक सत्य की ओर सुधारना शुरू किया। [6]

#### 4. महिलाओं का स्थान:

कबीर महिलाओं के प्रति बहुत नरम नहीं थे। तुलनात्मक समाज में महिलाओं की सच्ची तस्वीर पेश करने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। फिर भी उनकी रचनाओं से महिलाओं की वास्तविक स्थिति के बारे में कुछ बिखरे संकेत मिल सकते हैं। जिस प्रकार तुलसीदास जीमि स्वतंत्र होइ बिगराही नारी' कहकर समाज में नारी के वास्तविक स्थान को दर्शाते हैं, उसी प्रकार कबीर न केवल उनके स्वरूप पर बल्कि समकालीन समाज में उनकी स्थिति पर भी प्रकाश डालते हैं: [7]

"को-मणि कली नागनी" कबीर ने स्त्रियों के प्रति तिरस्कार की भावना जगाने की कोशिश की थी और तुलसीदास उनके स्वतंत्र आंदोलन के खिलाफ थे।"

यह बिलकुल सच है कि उस युग में महिलाओं को अपमानित नहीं किया जाता था, फिर भी उनके मुक्त आवागमन पर एक सीमा थी। मुसलमानों के आगमन ने पर्दा प्रथा को प्रयोग में लाया कबीर ने इसे क्रांतिकारी सुधारक की दृष्टि से देखा। पर्दा प्रथा ने कबीर को इतना चिढ़ाया कि उन्होंने इन आध्यात्मिक शब्दों में अपनी तीव्र अस्वीकृति व्यक्त की:

“राहु राहु री बहुरिया घुंघटा जिनी वोहरा

घुंघटा कहीं गई तेरे आगे,

उनकी गेल तोही जिनी भागे”

उन दिनों महिला लोक शिक्षा प्राप्त करती थी। इब्नबतुता ने ऐसी अनेक संस्थाएँ देखीं जिनमें स्त्रियाँ शिक्षित थीं। इसके बावजूद उनकी स्वतंत्रता सीमित थी। अविवाहित

लड़कियों को कबीर तक ने अनुमति नहीं दी थी। उनके व्यक्ति का सौंदर्यकरण। [8]

### 5. सामाजिक और धार्मिक सुधारक

बहुत से लोग संत कबीर दास को उत्तरी भारत में रहने वाले सबसे महत्वपूर्ण भक्ति और सूफी कवि मानते हैं। कबीर नाम अल-कब्र से आया है, जो कुरान में उल्लिखित भगवान का 37वां नाम है और जिसका अर्थ है "महान।" नाम का दूसरा भाग, दास, "दास" या "नौकर" के लिए संस्कृत शब्द से आता है और दो भागों को मिलाकर पूरा नाम कबीर बनता है। वह उसी समय अवधि के भीतर रहता था जैसा कि 14वीं और 15वीं शताब्दी के मोड़ के दौरान अन्य लोग करते थे। कबीर के जन्म के आसपास की परिस्थितियों के बारे में अभी भी काफी अनुमान है। उनके जन्म की समय सीमा के साथ-साथ उनके माता-पिता की पहचान को लेकर पेशवरों के बीच काफी असहमति है। [9]

संत कबीर हिंदू धर्म में प्रचलित जाति व्यवस्था के घोर विरोधी थे। उन्होंने वेद और कुरान दोनों के अधिकार पर संदेह किया और तर्क दिया कि जातियों के बीच कोई भेद नहीं होना चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को समान मात्रा में मूल्य के साथ बनाया जाता है। उनके सखियों में से एक इस विषय पर उनके विचारों को पकड़ने का एक उत्कृष्ट काम करता है।:

“उंचे कुल का जन्मिया, जे करनी उन न होई,

सुबरन कलास सुर भरा, साधु निंदा सोई।”

उन्होंने विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं के लोगों को एकजुट करने के साधन के रूप में प्रेम-केंद्रित धर्म की वकालत की। [10]

### 6. राजनीतिक विचार

कबीर के राजनीतिक विचारों पर विमर्श उत्तर भारत में 15वीं शताब्दी के बनारस की पृष्ठभूमि में स्थित होना चाहिए, जिसमें अभिजात वर्ग की प्रचलित आधिपत्य संस्कृति और विचारधारा, इसकी राज्य संरचना, कराधान, तकनीक, इसकी जाति, वर्ग, धर्म, लैंगिक प्रभुत्व, और विभिन्न रूपों में सबाल्टर्न के विरोध आंदोलनों का। इसे बढ़ते व्यापार के संदर्भ में भी देखने की जरूरत है जिसने सामाजिक समूहों और व्यक्तियों की ऊर्ध्वाधर-क्षैतिज गतिशीलता के अवसरों को सुगम बनाया। हालांकि, अभिजात वर्ग ने सबाल्टर्न की इस ऊपर की ओर गतिशीलता के खिलाफ प्रतिक्रिया व्यक्त की। कबीर, जो खुद एक बुनकर हैं और बनारस के कपड़ा

बाजार में अपने उत्पादों के विक्रेता हैं, इस सामंती प्रतिक्रिया और अभिजात वर्ग द्वारा भेदभाव के आलोचक थे। उनकी सार्वभौमिक श्रेणियां और एकेश्वरवादी प्रथा का उद्देश्य अपने समय के सामाजिक विभाजन को पार करना था। [11]

रामविलास शर्मा लिखते हैं कि कबीर और तुलसी दोनों ने वर्गों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपने समय की जाति संरचना को पार किया जो उनके लेखन में परिलक्षित होता है। बढ़ते व्यापार ने पारंपरिक ढांचे को नुकसान पहुंचाया। या व्यापार ने पुराने बंधनों को इस हद तक तोड़ दिया कि व्यापारी जाति / वर्ग, बनिया भी अब कबीर की आलोचना से बच नहीं पाए, जिन्होंने टिप्पणी की थी कि जिसका अर्थ था कि व्यापारी, दुकानदार या व्यापारी वर्ग दुष्ट हैं।

### 7. राजनीतिक परिस्थितियाँ

14वीं शताब्दी के मध्य में तुगलक वंश का शासन देखा था। तुगलक से पहले देश गुलाम वंश के लोहे के चंगुल में कराहता था। मोहम्मद तुगलक का शासन देश के अधीन लोगों के लिए दुखों और कष्टों का काल था। उसकी विश्व विजय की महत्वाकांक्षा, पूँजी परिवर्तन, ताँबे के सिक्कों की मुद्रा तथा हिन्दुओं के क्रूर संहार ने प्रजा के लिए बड़ा संकट और कठिनाई उत्पन्न कर दी थी। अकाल, महामारी, बिना सोचे-समझे रक्तपात से लोगों में भय और हताशा थी। बार-बार अकाल की मार ने जीवन को असहनीय बना दिया था। फ़िरोज़ शाह तुगलक एक संकीर्ण सोच वाला व्यक्ति था जो अपनी रूढ़िवादी आस्था और क्रूरता के लिए कुख्यात था। [12]

ब्राह्मणों पर 'डोली टैक्स' नामक एक धार्मिक कर लगाया गया। इस बकवास कट्टरता ने कई निर्दोष और धर्मपरायण हिंदुओं को तलवार के घाट उतार दिया। फ़िरोज के बाद जो गद्दी पर बैठे वे भी क्रूर अधर्मी, धर्मांध और विलासी जीवन के प्रेमी थे। देश के ऐसे अंधकारमय काल में तैमूर का अचानक आक्रमण लोगों पर नीले रंग से बोल्ट की तरह आ गया। इस आक्रमण ने न केवल हिंदुओं की शांति और प्रतिष्ठा को पूरी तरह से नष्ट कर दिया, बल्कि इसके जल्दबाजी में किए गए नरसंहार की क्रूरता ने सभी मानवीय सीमाओं को पार कर दिया। पुरुष, महिलाएं, बच्चे-सभी उसके सैनिकों के शिकार हुए। देश में अराजकता और गरीबी का बोलबाला था। तैमूर ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि उसका आक्रमण काफ़िरों को दंड देने, बहुदेवताओं की पूजा और मूर्ति पूजा

को नष्ट करने और 'गाजी' और युवाहिद की स्थापना के लिए था।

### 8. संत कबीर के दर्शन में ईश्वर का विचार

एक भी भारतीय संत या "भक्ति आंदोलन" का अनुयायी नहीं है जो भगवान के अस्तित्व पर संदेह करता हो। उनकी दृष्टि में ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण अनावश्यक है। हालाँकि, संत कबीर के लिए धन्यवाद, अब हमारे पास सबूत हैं कि भगवान मौजूद हैं। दूसरे शब्दों में, वह जानना चाहता है, "वह कलाकार है जिसने आकाश में दिखने वाले सितारों को चित्रित किया है?" आकाश किस बिंदु पर खुद को स्थिर करता है? जो इस बात को जान लेता है, वह परम सौभाग्यशाली होता है। ईश्वर की रचना करने की क्षमता उतनी ही असीम है जितनी सूर्य और चंद्रमा के गोले जिनका उपयोग वह पृथ्वी पर प्रकाश प्रदान करने के लिए करता है। कबीर कहते हैं कि केवल भगवान से भरे दिल और भगवान से भरी वाणी वाला ही इसे कभी समझ सकता है। ईश्वर, लौकिक जुलाहा, एक रहस्य में डूबा हुआ है जिसे अभी तक कोई भी हल नहीं कर पाया है। [13]

जबकि संत कबीर इस बात से इंकार नहीं करते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व है, वे किसी व्यक्ति के स्वयं के विश्वास को सबसे अधिक महत्व देते हैं जो ईश्वर करता है। ग्रंथावली और बीजाक भजनों में भगवान की उपस्थिति के प्रमाण मिलते हैं, जो इस धर्म का आधार बनते हैं। ईश्वर के अस्तित्व का पहला प्रमाण मानव आत्मा का अस्तित्व है। डेसकार्टेस के कोगिटो एर्गो सुम और वेदांत के अहम् ब्राह्मण अस्मि का एक ही दार्शनिक आधार है। यदि ईश्वर मनुष्य नहीं है, तो हम अपनी इंद्रियों के अलावा अन्य तरीकों से उसका ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। [14]

### 9. निष्कर्ष

कबीर की कोई निश्चित धार्मिक मान्यता नहीं थी। उन्होंने मनुष्य के आवश्यक कर्तव्य पर बहुत जोर दिया, जो उनके अनुसार मानव प्रगति के लिए आवश्यक था। वे समाज और मानव संस्कृति से झूठे दिखावे को दूर करना चाहते थे और एक आदर्श समाज की स्थापना करना चाहते थे। हिंदुओं और मुसलमानों पर उनके तीखे ताने इसी लक्ष्य को लेकर थे। कबीर के पास असाधारण प्रतिभा थी। उनके लिए हर शरीर समान था। उनके लिए जाति और पंथ का कोई मतलब नहीं था। आज दुनिया भर में शत्रुता, ईर्ष्या और दुष्टता की एक शक्तिशाली लहर कबीर के सिद्धांतों को दैनिक जीवन में लाने के लिए एक नया और आदर्श समाज

अस्तित्व में आएगा। कबीर के आगमन से पहले ही भारत में मुस्लिम शासन स्थापित हो चुका था। कबीर के युग में धार्मिक कट्टरता एक नई प्रकृति विकसित कर रही थी। कबीर ने बेचैन मन से हर बात पर ध्यान से विचार किया। उन्होंने उस बात की तीखी आलोचना की जो उन्हें अच्छी नहीं लगती थी और अपनी बानी में बुराइयों को दूर करने के उपाय सुझाते थे।

### संदर्भ:

1. भक्तमाल (2009): राघोदास, संपादित अग्रचंद्र नाहटा, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, विक्रम संवत्।
2. बाबर (2000): बाबर के नाम या संस्मरण-इंजी। ट्रा., ए.एस. बेविरिज, प्रतिनिधि, दिल्ली।
3. बी.एन. पांडे (2010) इस्लाम एंड इंडियन कल्चर, प्रतिनिधि, दिल्ली।
4. चतुर्वेदी परशुराम, (2002) उत्तर भारत की संत परंपरा, पहला संस्करण, इलाहाबाद, 1952, संस्करण, इलाहाबाद।
5. चिनचोर एम., (2004) ड्रुथ एंड वैल्यू, एड. रघुनाथ घोष, न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली, भारत
6. कॉन्स्टेंस ए. जोन्स एंड जेनीज़ डी. रेयान, (2005) एनसाइक्लोपीडिया ऑफ हिंदूइज़्म, एन इम्प्रिंट ऑफ़ इन्फो बेस पब्लिशिंग, न्यूयॉर्क, एनवाई 10001।
7. भंडारकर की संकलित कृतियाँ - ग्रन्थ 4.
8. छाबड़ा, गोविंदलाल। (2006) क्रांतिकारी कबीर। दिल्ली: रंजीत प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स।
9. चाडविक, चार्ल्स। (2007) प्रतीकवाद। लंदन: मेथ्यून एंड कंपनी लिमिटेड..
10. चौधरी, हरिदास और फेडरिक (2010) स्पीगेलबेरी। श्री अरबिंदो का अभिन्न दर्शन। लंदन: जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड..
11. चंद्रा, बिपना। मुखर्जी, मृदुला। मुखर्जी, आदित्य। महाजन, सुचेता। (2011) पणिककर, स्वतंत्रता के

लिए भारत का संघर्ष, पेंगुइन बुक्स, 1989। पी।  
422

12. शास्त्रीय नाटक, विजयेंद्र। (2005) कबीर। दिल्ली:  
राधाकृष्णन प्रकाशन।
13. दादुदयाल ग्रन्थावली (2007): संपादित, पी.आर.  
चतुर्वेदी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, वी.एस.
14. दशरथ शर्मा (2000): "द श्री अर्लीएस्ट जैन  
इन्फ्लुएंसर ऑफ़ मुग़ल रिलिजियस पॉलिसी:  
पद्मसुंदरा, अनानद्रजा और अजयराजा",  
ए.बी.ओ.आर.आई., वॉल्यूम। XXV, भाग- III, पूना।

---

#### Corresponding Author

**Sandeep Prajapati\***

Research Scholar, Shri Krishna University,  
Chhatarpur, M.P.India

Email: ssk596259@gmail.com